भट्टारक चन्द्रकीर्ति

जीवन-परिचय : ये भट्टारक विद्याभूषण के प्रशिष्य एवं श्रीभूषण के पट्टधर शिष्य थे। ये ईडर की गद्दी के भट्टारक थे। चन्द्रकीर्ति बहुत ही लब्धप्रतिष्ठ और यशस्वी भट्टारक थे।

इनका समय 17वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा लिखित निम्न रचनाएँ हैं—

1. पार्श्वनाथपुराण : इन्होंने संवत् 1654 में देवगिरि पर्वत पर पार्श्वनाथ पुराण की रचना की थी। यह 15 सर्गों में विभक्त है। इनकी कुल श्लोकसंख्या 2715 है।

2. वृषभदेवपुराण : इस पुराण में प्रथम तीर्थंकर वृषभदेव की कथा 25 सर्गों में विभक्त है।

इन ग्रन्थों के साथ इन्होंने कई पूजाएँ भी लिखी हैं। जिनके नाम निम्नलिखित हैं।—

1. पार्श्वनाथ पूजा, 2. नन्दीश्वरपूजा, 3. ज्येष्ठजिनवरपूजा, 4. षोडशकारण पूजा, 5. सरस्वतीपूजा, 6. जिनचौबीसीपूजा, 7. गुरु पूजा।